# प्रेम, नहीं हिंसा: हर पति के लिए परमेश्वर की योजना

**1. हिंसा परमेश्वर के स्वभाव के विरुद्ध है**

“यहोवा धर्मी की परीक्षा करता है, परन्तु दुष्ट और हिंसा से प्रेम करनेवाले से वह अपनी आत्मा से घृणा करता है।”— **भजन संहिता 11:5**

परमेश्वर हिंसा से घृणा करता है। जो पति अपनी पत्नी को मारता, डराता या दबाता है, वह परमेश्वर के उस स्वभाव के विरुद्ध चलता है जो **प्रेम** है (1 यूहन्ना 4:8)। विवाह एक वाचा है जो मसीह के अपनी कलीसिया के प्रति प्रेम का प्रतिबिम्ब होना चाहिए — न कि शक्ति, नियंत्रण या भय का।

**2. पति बुलाए गए हैं प्रेम करने के लिए, न कि हानि पहुँचाने के लिए**

“हे पतियों, अपनी पत्नियों से वैसे ही प्रेम करो, जैसे मसीह ने कलीसिया से किया और उसके लिये अपने आप को दे दिया।”— **इफिसियों 5:25**

यीशु ने अपनी दुल्हन पर प्रभुत्व नहीं किया, न उसे बलपूर्वक वश किया या हानि पहुँचाई। उसने उसकी रक्षा और उद्धार के लिए अपना जीवन अर्पित किया। पौलुस की यह आज्ञा गंभीर है — पति स्वार्थी नियंत्रण नहीं, बलिदानी प्रेम दिखाएँ। हिंसा का कोई भी कार्य इस आज्ञा का उल्लंघन है।

**3. उत्पीड़न परमेश्वर और उसकी छवि दोनों के विरुद्ध पाप है**

“हे पतियों, वैसे ही अपनी पत्नियों के साथ समझदारी से रहो, और उन्हें आदर दो क्योंकि वे निर्बल तन की दृष्टि से कोमल हैं, और जीवन के अनुग्रह की सह-वारिस भी हैं, ताकि तुम्हारी प्रार्थनाएँ रोक न दी जाएँ।”— **1 पतरस 3:7**

जो पति अपनी पत्नी का अनादर या दुर्व्यवहार करता है, वह न केवल उसे हानि पहुँचाता है बल्कि अपने आत्मिक संबंध को भी क्षति पहुंचाता है। परमेश्वर ऐसे मनुष्य की प्रार्थना नहीं सुनता जो अपनी पत्नी का अपमान करता है। हिंसा मनुष्य और परमेश्वर के बीच के संबंध को तोड़ देती है।

**4. सच्चा प्रेम कभी दुख नहीं देता**

“प्रेम धीरज धारण करनेवाला और दयालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम डिंग नहीं मारता, और घमण्ड नहीं करता।
वह अनुचित व्यवहार नहीं करता, अपना ही भला नहीं चाहता, झट क्रोध नहीं खाता, और बुराई का लेखा नहीं रखता।”— **1 कुरिन्थियों 13:4-5**

सच्चा प्रेम निर्माण करता है, विध्वंस नहीं। जो पति परमेश्वर की परिभाषा के अनुसार प्रेम करता है, वह अपनी पत्नी की रक्षा करेगा — यहाँ तक कि अपने क्रोध या दोष से भी।

**5. परमेश्वर पीड़ितों की रक्षा करता है**

“यहोवा पीड़ितों के लिये शरणस्थान और संकट के समय दृढ़ गढ़ है।”— **भजन सहिंता 9:9**

परमेश्वर कमज़ोर और दुख झेलनेवालों का पक्ष लेता है। एक स्त्री जो उत्पीड़न झेल रही है, उसे चुपचाप सहने के लिए नहीं कहा गया है — उसे सुरक्षा और न्याय की पूर्ण अधिकारिता है। परमेश्वर उस कष्ट को आशीष नहीं देता जो पाप से उत्पन्न हो।

**सारांश शिक्षा**

बाइबल की शिक्षा स्पष्ट है:

- हिंसा पाप है।
- प्रेम का अर्थ है बलिदान, कोमलता और रक्षा।
- विवाह मसीह के प्रेम का प्रतिबिम्ब है, न कि नियंत्रण का।
- परमेश्वर घायल के साथ खड़ा होता है और उत्पीड़क का विरोध करता है।

जो पति अपनी पत्नी पर हाथ उठाता है, वह आशीष के नीचे नहीं, विचार (न्याय) के नीचे खड़ा है।
**पश्चाताप** सिर्फ “माफ़ी” नहीं — यह पाप से मुड़ने, स्वीकार करने, और जवाबदेही के अधीन हो जाने की जीवित क्रिया है, ताकि सच्चा चंगाई और पुनर्स्थापन आ सके।